Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 6, Print Issue 1&2 - 2021, Pg. No. 17-19
Peer Reviewed Journal

Research Article

वेदों में पर्यावरण के तत्व

Rameshwar Pandey

Assistant Professor, Department of Ancient History, National PG College Barhalganj, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102

I N F O

E-mail Id:
rameshwarnpg@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-2969-6174

Date of Submission: 2021-04-02
Date of Acceptance: 2021-05-05

सारांश

इस लेख में, लेखक ने वेदों में वर्णित पर्यावरण के तत्वों पर गहनता से प्रकाश डाला है और गहन विश्लेषण किया है। वेदों में वर्णित पर्यावरण के तत्व प्राचीन भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति समझ और श्रद्धा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये प्राचीन ग्रंथ पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं, जिसमें न केवल भौतिक परिदृश्य बल्कि प्राकृतिक दुनिया के साथ मनुष्यों के आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक संबंध भी शामिल हैं। ज्वलंत कल्पना और गहन अंतर्दृष्टि के माध्यम से, वेद मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र के बीच जटिल संबंध को दर्शाते हैं, सभी जीवित प्राणियों और पर्यावरण के बीच अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रयता पर प्रकाश डालते हैं। हवा, जल, आकाश, पृथ्वी, पौधे, वनस्पति, ओजोन परत, सूर्य, वायुमंडल, बारिश और ओषधियों जैसी अवधारणाओं की व्याख्या करके, लेखक यह बताता है कि मनुष्य इन तत्वों के साथ कैसे जटिल रूप से जुड़े हुए हैं और उनका व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। लेख के अंत में, लेखक वेदों में उल्लिखित जल के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए हमारे जीवन में इसके सर्वोपरि महत्व पर जोर देते हैं। व्यापक अन्वेषण जल की व्यावहारिक उपयोगिता के संबंध में वेदों में निहित गहन ज्ञान को उजागर करता है, जिसे मानव कल्याण के लिए आवश्यक बताया गया है।

मुख्य बिंदुः वेद, पर्यावरण, प्राचीन, ग्रंथ, पारिस्थितिकी, ओजोन, परतए अग्निए वायुमंडलए जल।

विश्व भर में पर्यावरण संकट है। इससे सम्पूर्ण मानव जाति एवं जीव जन्तु पीडित है और प्राकृतिक संम्पदा भी निरन्तर प्रभावित होकर विनाश की ओर आगे बढ़ रही है। पर्यावरण समस्या के कारण प्रतिवर्ष लाखों प्राणी काल का ग्रास बन रहे है। इनसे मुक्ति पाने के लिए प्रतिवर्श अरबों रूपये व्यय किये जा रहे है। फिर भी पर्यावरण समस्या से मुक्त का उपाय नही दिखाई देता।

प्राचीन भारत में पर्यावरण समस्या कहीं नहीं थी। जड़ चेतन जगत सुरक्षित था। प्राचीन ऋषि एवं चिन्तन विद्वान सभी पर्यावरण के प्रति पूर्णतः जागरूक थे। प्राचीन भारत में यज्ञ पूजा पद्धति सर्वत्र प्रचलित था। राजा, गृहस्थ, वान प्रस्थी, सयासी सभी यज्ञ के द्वारा वायु को शुद्ध रखते थे। वनस्पति जगत और पशु जगत को पुत्रवत मानकर उनका पालन व संरक्षण किया जाता था।

भारत सरकार ने जून 1992 में ब्राजील के रियो शहर में हुए पृथ्वी सम्मेलन में स्पष्ट किया था कि पर्यावरण संरक्षण देश की जनता के लिए नया विचार नहीं है। बल्कि प्राकृतिक संपदा का सम्मान, आदर और संरक्षण करने की भारतीय परम्परा बहुत पुरानी है। वेद वाङ्मय पर्यावरण के बारे में मूल विचार देता है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्राकृतिक सम्पदा और वन्य जीवन संरक्षण आस्था और विश्वास का विषय रहा है। जिसका प्रतिविम्ब सामान्य जीवन में दिखाई देता है और देव कथाओं, कहानियों, धर्म, कला और संस्कृति में विद्यमान है। सम्राट अशोक ने वन्य जीवन और वन सम्पदा की रक्षा करना एक राजा का कर्तव्य माना था। उन्होंने वनों को नष्ट करने तथा पशुओं का वध करने पर रोक लगाते हुए शिला खण्डों पर आदेश अंकित कराये थे। यह ऐतिहासिक प्रमाण वर्तमान में भी विद्यमान है और पूरे विश्व में प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण हेतु किया गया प्रथम उपाय है।

Copyright (c) 2021: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रकृति एवं मानव जाति के सम्बन्ध के सूचक अनेक दृष्टान्त प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलते है। वैदिक वाङ्मय में मानव और प्रकृति के मध्य जिन गूढ़ अन्तः सम्बन्धों का प्रतिपादन हुआ उसमें पर्यावरण के प्रति प्रगाढ श्रद्धा एवं चेतना परिलक्षित होती है। ऋग्वेद में अहिंसा, संवेदनशीलता, शान्ति, अपरिग्रह और जनसंख्या नियंत्रण जैसे सद्गुणों के विकास पर बल दिया गया है। मनुष्य को मनुष्य की सभी प्रकार से रक्षा करनी चाहिए।[1] वेदों में तत्वदर्शी ऋषियों ने प्रारम्भ में सैकड़ो मंत्रो के द्वारा पर्यावरण के प्रति चेतना उत्पन्न की थी। अथर्ववेद के भूमि सूक्त का एक मंत्र वृक्ष की ओर से चेतावनी देता है कि हे मानव तू मुझे मत काट अन्यथा मैं तुम्हें काट दूँगा। भूमि के अनावश्यक खनन का वेद में बार–बार निषेध किया गया है। जल को भी शुद्ध करने के अनेक कथन वेदों में लिखित है और अधिक से अधिक वन्य सम्पत्ति उगाने और उसकी रक्षा की प्रेरणा दी गयी है। ऋजुर्वेद में कुशल मंगल रखने वाले फल युक्त वनस्पति और औषधी को प्रचुर मात्रा में उगाने की प्रेरणा दी गयी है।

"निकामे निकामे नः पर्जन्तो वर्षतु फलवत्यो

नः ओषधयः पच्यन्ताम योगक्षमोः न कल्पताम्"।

अथर्ववेद के मंत्रों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन मानव पर्यावरण विषयक अवधारणाओं से पूर्ण परिचित था।[2] एक मंत्र में यह प्रश्न उठाया गया है कि भूमि को किसने छाया हुआ है ? किसने घुलोक को घेरा है? किसने महिमा को पहाड़ो को ढका है? पुरूष किससे कर्मों को करता है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया है कि जल, वायु और औषधियों ने इस भूवन को आच्छादित कर रखा है।[2]

चारों वेदों में पर्यावरण सम्बन्धी अनेक संदर्भ प्राप्त होते है। ऋषियों ने पर्यावरण की शुद्धता एवं स्वच्छता के प्रति इतनी जागरूकता थी कि वे कहते थे कि मानव के लिए अन्तरिक्ष में रहने वाला वायु पर्यावरण को शुद्ध करता रहे. जल अमृत की वर्षा करे, सूर्य शरीर के लिए सुखकर तपे जिससे वह दीर्घायु हो सके।[3] वेदों में वायु की शुद्धता पर चिन्तन अनेक स्थानों पर मिलता है। वायु मानव जीवन का आधार है। इसलिए जीवन रक्षा हेतु वायु प्रदूषण के सभी तत्वों का नियंत्रण आवश्यक है। अथर्ववेद में 'आपों वाता ओषधयः' कहकर यह निर्देश दिया गया है कि पर्यावरण की रक्षा हेतु वायु की शुद्धता पर ध्यान देना अनिवार्य है। अथर्ववेद में ही वायु और सूर्य के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि तुम दोनों संसार के रक्षक हो। तुम अन्तरिक्ष में व्याप्त हो। तुम सभी प्रकार के रोगों को नष्ट करते हो।[4] अथर्ववेद में वायु के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वायु में दो गुण है। प्राणवायु के द्वारा मनुष्य में जीवन सत्य का संचार करना और अपान वायु के द्वारा सभी दोषों को शरीर से बाहर करना। इसीलिए वायु को विश्वभेषज कहा गया है, क्योंकि यह सभी रोगों और दोषों को नष्ट करता है।[5] वायु के महत्व पर ऋग्वेद में प्रकाश डाला गया है कि हे वायु तुम्हारे पास अमृत का खजाना है। तुम्हीं जीवन के शक्तिदाता हो। तुम संसार के पिता भाई और मित्र हो। तुम सब रोगों के औषधि हो।[6] इसी में एक मंत्र में कहा गया है कि वायु में अमृत (आक्सीजन) है। उसे नष्ट न होने दें। इसका तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई कार्य न करे जिससे वायु में आक्सीजन का क्षरण हो।[7]

वेदों में ओजोन परत की रक्षा पर भी विशेष बल दिया गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में भूमि के चारों ओर ओजोन की परत की उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद में ओजोन की परत के लिए "महत् उल्ब" शब्द आया है और उसे स्थूल या मोटी परत कहा गया है। अथर्ववेद में इस ओजोन की परत का रंग हिरण्य अर्थात् सुनहरे रंग का बताया गया है। उल्ब शब्द गर्भस्थ शिशु के ऊपर ढकी हुई झिल्ली के लिए आता है। यहाँ पर पृथ्वी को एक गर्भस्थ शिशु मानते हुए उसकी रक्षा के लिए विद्यमान ओजोन की परत का महान् और स्थूल उल्ब कहा गया है। वेदों के इन मंत्रों से स्पष्ट है कि ओजोन की परत पृथ्वी की रक्षा करती है। इसको हानि पहुँचाना उसी प्रकार संकटकारी है, जैसे गर्भस्थ शिशु की झिल्ली से छेड़–छाड़ करना।[8]

वेदों में पृथ्वी और आकाश को पर्यावरण की समस्या से मुक्त करने संबंधी अनेक मंत्रों का प्रयोग किया गया है और उनके संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। वेदों में वायु मण्डल की शुद्धि के लिए पृथ्वी और आकाश के संरक्षण पर विशेष प्रकाश डाला गया है। आकाश पृथ्वी में सूर्य आदि लोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी तीनों का समावेश है। आकाश और पृथ्वी परस्पर सम्बद्ध है। इनमें पोष्य और पोषक संबंध हैं। सूर्य ऊर्जा का स्त्रोत है। अन्तरिक्ष वृष्टि का कारक है और पृथ्वी उर्जा तथा वृष्टि का उपयोग कर अन्नादि की समृद्धि से मानव जीवन को संचालित करती है। ये तीनों परस्पर आपस में जुड़े हुए को शक्ति प्रदान करते है। वृक्ष वनस्पतियों का जीवन वर्षा पर निर्भर करता है। अतः वृष्टि (वर्षा) चक्र है। वायु मण्डल प्राण उर्जा देकर मानव जीवन को जीवित रखें हुए है। वृक्ष आक्सीजन देकर मनुष्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए यज्ञ आदि की उपयोगिता पर बल दिया गया है। पृथ्वी जल, अग्नि और वायु ये समन्वित रूप से मानव जीवन का संचालन कर रहे है। यह संतुलन जब बिगड़ता है, तब इस जगत का विनाश शुरू हो जाता है।

वेदों में अनेक स्थानों पर आकाश और पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त रखने का निर्देश दिया गया है तथा यह भी कहा गया है कि ऐसा कोई कार्य न करे जिससे आकाश और पृथ्वी को हाँनि पहुँचे। ऋग्वेद के एक मंत्र में यह कहा गया है कि आकाश और पृथ्वी चेतन तत्व है। ये हमारे रक्षक है। यदि इनको प्रदूषित किया जाता है तो विनाश विपत्ति और संकट की स्थिति उपस्थित होगें। इसी प्रकार यजुर्वेद के एक मंत्र में आकाश, पृथ्वी अन्तरिक्ष, जल, औषधियों और वनस्पतियों से प्रार्थना की गयी है कि वे प्रदूशण मुक्त होकर हमारे लिए सुख शान्ति प्रदान करें।[9]

इसी प्रकार वेदों में जल की उपयोगिता और महत्व पर भी विशेष प्रकाश डाला गया है। जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोग नाशक है, आयु वर्धक है। जल को प्रदूषित करना पाप माना गया है। इनमें जल की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जल में औषधियों के तत्व विद्यमान है। अतः सारे रोगों का उपचार है। यह मनुष्य को जीवन शक्ति प्रदान करता है। जल शक्ति वर्धक और रोग नाशक है। जल में सोम आदि का रस मिलाकर सेवन से मनुष्य दीर्घायु होता है।[10] जल से आनुवंशिक रोग भी नष्ट हो जाते है। जल को सर्वोत्तम वैद्य बताया गया है और कहा गया है कि यह आँख, पैर आदि के सभी प्रकार के दर्द को दूर करता है

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102

तथा हृदय के रोगों का भी उपचार करता है।[11] इस प्रकार वेदों में पर्यावरण संबंधी अनेक मंत्र मिलते है। जिनसे पृथ्वी, आकाश, सूर्य आदि के पर्यावरण के विषय में प्रकाश पड़ता है।

निष्कर्ष

इस लेख में, लेखक ने वेदों में वर्णित पर्यावरण के तत्वों पर विचारपूर्वक विस्तार से बताया है, प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति को कैसे चित्रित और सम्मानित किया गया है, इसकी विस्तृत खोज प्रस्तुत की गई है। लेखक वैदिक साहित्य में वर्णित पर्यावरण के गहन महत्व पर प्रकाश डालते हैं, जो मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों पर जोर देते हैं। एक व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, लेख वेदों में उजागर विभिन्न पर्यावरणीय तत्वों के बीच जटिल संबंधों की जांच करता है, जो इन प्राचीन ग्रंथों में निहित आध्यात्मिक और पारिस्थितिक ज्ञान पर प्रकाश डालता है। लेखक बताता है कि कैसे वेदों में पर्यावरणीय तत्वों का चित्रण मानवता और प्राकृतिक दुनिया के बीच पवित्र बंधन की याद दिलाता है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी और नेतृत्व की भावना को प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा, लेखक कुशलतापूर्वक उन तरीकों को स्पष्ट करता है जिसमें वेद प्रकृति के संरक्षण और सम्मान की वकालत करते हैं, जो टिकाऊ जीवन पद्ध तियों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो आज के संदर्भ में प्रतिध्वनित होते हैं। वैदिक शिक्षाओं में संचारित गहरे पारिस्थितिक लोकाचार की खोज करके, यह लेख पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण सिद्धांतों की कालातीत प्रासंगिकता के प्रमाण के रूप में कार्य करता है जो सदियों से पारंपरिक भारतीय दर्शन में शामिल हैं। अंततः, यह लेख वेदों में निहित स्थायी ज्ञान की एक सम्मोहक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है जो हमे पर्यावरण के साथ अपने संबंधों पर अधिक समग्र और सावधानीपूर्वक विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संदर्भः

1. ऋग्वेद 6.75.14
2. अथर्ववेद 10.2.8, 18.1.7
3. अथर्ववेद 8.1.5
4. अथर्ववेद 4.25.1–7
5. अथर्ववेद 4.13.3
6. ऋग्वेद 10.185.1–3
7. ऋग्वेद 6.37.3
8. अथर्ववेद 3.21.10
9. ऋग्वेद 10.51.1 एवं अथर्ववेद 4.2.8
10. यजुर्वेद 36.17
11. यजुर्वेद 2.9

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202102